International Journal of Economic Perspectives,*15*(1), 625-630
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

आदिवासी कविता में विमर्श

डॉ. दीपक कुमार
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, भेरियां, कुरुक्षेत्र।

'आदिवासी' शब्द से तात्पर्य है - वनवासी या जंगली आदिम। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' शब्द का प्रयोग किया गया है। भारत की जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत अर्थात जनसंख्या का 10 करोड़ भाग आदिवासियों का है। महात्मा गांधी आदिवासियों को गिरिजन अर्थात पहाड़ पर रहने वाले लोग कहते थे। डॉ. एन.एस.कलेश आदिवासी की परिभाषा लिखते हुए कहते हैं - ''किसी निश्चित भू-भाग में आदि-अनादि काल से आर्यों से भी पूर्व काल से निवास करने वाले जनसमूह जिसकी अन्य समुदाय से पृथक कला संस्कृति परंपरा जीवन शैली के साथ-साथ प्रकृति की पूजा जैसे जल, जंगल जमीन पेड़ पौधों की करता है, उसी जनसमूह को आदिवासी या मूलनिवासी कहा जाता है।''[1] आदिवासियों पर शहरी सभ्यता एवं विकास के साधनों का बहुत कम प्रभाव पड़ा है। इसी कारण वह सदैव प्रगति के प्रभाव से वंचित रहा। आदिवासी समाज के लोग प्रायः जंगलों व पहाड़ों में रहते हैं। नए-नए अनुसंधानों, भौतिक संसाधनों से वंचित यह वर्ग सदा से अपनी परंपरा, त्यौहार, उत्सव व रीति-रिवाज को बनाए हुए है। देश में आदिवासियों की मूल समस्या-विस्थापन है। जल, जंगल और जमीन आदिवासियों की तीन मूल आवश्यकताएँ है जिनसे आज वो वंचित होते जा रहे हैं।

आदिवासी समाज आज वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण, सूचना और प्रौद्योगिकी व तकनीकी से जुड़ नहीं पाया है। आदिवासी समाज आज भी गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, शोषण और विस्थापन का शिकार है। महाजन, पूंजीपति, सरकारी कर्मचारी व पुलिस अधिकारी उनका शोषण करते आ रहे हैं। आदिवासियों के लिए जंगल ही सर्वस्व है। जंगल के नदियाँ, पहाड़, झरने, वन्य जीव ही उनके सच्चे मित्र हैं। जंगलों में

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : डॉ. दीपक कुमार

Submitted: 27 Oct 2021, Revised: 09Nov 2021, Accepted: 18 Nov 2021, Published 30 Dec 2021

International Journal of Economic Perspectives,*15*(1), 625-630

Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

भेड-बकरी चराना, कन्दमूल खाना, समूह में नाचना, गाना, बजाना और रात को शराब पीकर मदमस्त होकर सोना ही उनकी नियति है।

आदिवासी साहित्य आदिवासियों द्वारा लिखा गया साहित्य है। उन्होंने अपने साहित्य में अपने विगत त्रासदीपूर्ण अनुभवों को संजोया है - ''आदिवासी लोक में साहित्य सहित विविध कला-माध्यमों का विकास तथाकथित मुख्यधारा से पहले हो चुका था लेकिन वहाँ साहित्य सृजन की परंपरा मूलतः मौखिक रही। जंगलों में खदेड़ दिए जाने के बाद भी आदिवासी समाज ने इस परंपरा को अनवरत जारी रखा। ठेठ जनभाषा में होने और सत्ता प्रतिष्ठानों से दूरी की वजह से यह साहित्य आदिवासी समाज की तरह उपेक्षा का शिकार हुआ। आज भी सैकड़ों देशज भाषाओं में आदिवासी साहित्य रचा जा रहा है, जिसमें से अधिकांश से हमारा संवाद शेष है।''[2]

हिंदी साहित्य में आदिवासी साहित्य का आरंभ कविताओं से ही माना जाता है। आदिवासी काव्य उनके भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति है। हिंदी के बहुत से कवियों ने आदिवासी स्वर को कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। लेकिन वास्तविक सफलता आदिवासी कवियों को ही मिली। आदिवासी कवियों में महादेव टोप्पो, हरिराम मीणा, रामदयाल मुंडा, वहरू सोनवणे, लक्ष्मण टोपले, उषाकिरण, निर्मला पुतुल, बंदना टेटे, अनुज लुगुन, सहदेव सोरी, सुरेन्द्र कुमार नायक आदि प्रमुख हैं। इन कवियों के चर्चित काव्य संकलन हैं- 'नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द, 'अपने घर की तलाश में' (निर्मला पुतुल), 'उलगुलान' (भुजंग में श्राम) 'गोधड़ और निवड़क' कविता (डॉ. वहरू सोनवणे) 'हाँ चाँद मेरा है' (हरिराम मीणा), 'डेहरी' (मुन्ना साह) आदि। रमणिका गुप्ता द्वारा संपादित 'आदिवासी' स्वर और नयी शताब्दी' में भी सशक्त आदिवासी कविताएँ संकलित हैं।

आदिवासी कविताओं में स्त्री वीरांगनाओं की कहानियों की एक लंबी सूची है। इनके समाज में स्त्री उपेक्षित व अधिकार विहीन नहीं है, बल्कि वह पुरुष की सहभागिनी है। अंग्रेजों के शोषण व दमन के विरोध में महिलाओं की भूमिका रही है। आदिवासी संस्कृति के विस्तार में महिलाओं की भूमिका पुरुषों से अधिक है। रीति-रिवाजों एवं उत्सवों में प्रस्तुत होने वाले नृत्यों एवं गीतों में आदिवासी महिलाएँ बढ़कर हिस्सा लेती हैं आदिवासी अंचलों के हाट-बाजारों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की भूमिका अधिक

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : डॉ. दीपक कुमार

Submitted: 27 Oct 2021, Revised: 09Nov 2021, Accepted: 18 Nov 2021, Published 30 Dec 2021

International Journal of Economic Perspectives,*15*(1), 625-630

Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

दिखाई देती है। परिवार और पंचायत स्तर पर लिए जाने निर्णयों में स्त्री विचार का भी सम्मान किया जाता है। निर्मला पुतुल अपनी कविताओं में आदिवासी स्त्री अस्मिता की पड़ताल करती हैं। आदिवासी स्त्रियों को अभाव, गरीबी और भूख, पीड़ा, दर्द से जूझना पड़ता है–

''तुम्हारे हाथों बने पत्तल पर भरते हैं पेट हजारों
पर हजारों पत्तल भर नहीं पाते तुम्हारा पेट
जिन घरों के लिए बनाती हो झाड़ू
उन्हीं से आते है कचरे तुम्हारी
बस्तियों में''[3]

कवयित्री पुरुषों से प्रश्न करती है कि क्या वे आज तक स्त्री के व्यक्तित्व को पहचान पाए हैं? स्त्री मात्र देह नहीं है। उसकी स्वच्छ आत्मा को पहचानने की आवश्यकता है। रसोई और बिस्तर से परे उसका अपना अस्तित्व है जिसकी सामाजिक स्वीकृति आवश्यक है। निर्मला पुतुल इस संदर्भ में लिखती हैं–

''क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण?
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में .....?''[4]

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : डॉ. दीपक कुमार

Submitted: 27 Oct 2021, Revised: 09Nov 2021, Accepted: 18 Nov 2021, Published 30 Dec 2021

International Journal of Economic Perspectives,*15*(1), 625-630
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

आदिवासी अकेले नहीं रहते अपितु समूह में रहते हैं, समूह में जीते हैं और समूह के लिए ही मरते है। जंगल में जन्म लेने के कारण उनको गिरिजन, वनवासी, जंगली आदि नामकरण देकर उन्हें विकास के नाम पर जल, जंगल और जमीन को विस्थापित कर शहरों की ओर धकेला जा रहा है। आदिवासी लम्बे समय से अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। व्यवस्था और प्रशासन ने उनके जीवन को क्षति पहुंचाई है। विकास के नाम पर जब उनके गाँव में बिजली लगाई जाती है तो वे उसका भी विरोध करते हैं –

''उन्हें रोशनी नहीं चाहिए
बिजली के तार और खंभे
टयूब और बल्ब नहीं चाहिए
एक अंधेरा जो सब अंधेरों से बड़ा और घना है।
बीहड़ जंगलों
और गहरे कुओं के अंधेरे सभी से
बड़ा और घना है।''[5]

आदिवासियों को यह कहकर धोखे में रखा जाता है कि जंगलों का कटाव उनके विकास के लिए किया जा रहा है। जबकि बड़े-बड़े कारखाने लगाकर आदिवासियों को उनकी जमीन से साजिश के तहत बेदखल किया जा रहा है। इसी कारण शोषित, पीड़ित व विस्थापित आदिवासी अपने अधिकार से सजग होकर अपनी अस्मिता के लिए आवाज़ बुलंद कर रहे है। देश की आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश का यह तबका विकास से कोसों दूर अपनी मौलिक आवश्यकताओं के लिए जूझ रहा है। सरकार के पास उनके लिए न कोई योजना है न कानून। विनायक तुमराम 'एकलव्य' कविता में उनके साथ हुए अन्याय को चित्रित करते हुए लिखते हैं–

'मित्रवर तुम्हारे तरकश में
तड़पने वाले तीक्ष्ण तीर से
करूंगा मै क्रांति बनाऊँगा क्रांति की मशाल

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : डॉ. दीपक कुमार

Submitted: 27 Oct 2021, Revised: 09Nov 2021, Accepted: 18 Nov 2021, Published 30 Dec 2021

International Journal of Economic Perspectives,*15*(1), 625-630
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

तुम्हारे अंगूठे से बहे रक्त से लिखूंगा मृत्युलेख''[6]

आदिवासी विमर्श को नया आयाम देने में भूमंडलीकरण का बहुत बड़ा योगदान है। आज आदिवासियों की जीवन शैली, उनकी आवश्यकताओं व समस्याओं को लोग समझने लगे हैं। आदिवासी लेखकों व कवियों द्वारा लिखे गए साहित्य ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। लोगों में आदिवासियों को लेकर संवेदनाएं जगने लगी हैं। आदिवासी लेखक गंगा सहाय मीणा लिखते है कि – ''इस साहित्य का भूगोल, समाज, भाषा, संदर्भ शेष साहित्य से उसी तरह पृथक हैं, जैसे स्वयं आदिवासी समाज और यही पार्थक्य इसकी मुख्य विशेषता है। यह आदिवासी साहित्य की अवधारणा के निर्माण का दौर है। आदिवासी साहित्य अस्मिता की खोज, दिकुओं द्वारा किए गए और किए जा रहे शोषण के विभिन्न रूपों के उद्घाटन तथा आदिवासी अस्मिता व अस्तित्व के संकटों और उसके खिलाफ हो रहे प्रतिरोध का साहित्य है।''[7] निर्मला पुतुल ने आदिवासी कविता को नये विमर्श के साथ प्रस्तुत किया है। आदिवासियों की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन रीति-रिवाज व आवश्यकताओं से वे भलीभांति परिचित हैं। आदिवासियों को विकास के नाम पर विस्थापित कर उनसे छल व विश्वासघात किया जा रहा है। वे लिखती हैं –

''अगर हमारे विकास का मतलब
हमारी बस्तियों को उजाड़कर कल-कारखाने बनाना है
तालाबों को भोथकर राजमार्ग
जंगलों का सफाया कर ऑफिसर्स कॉलोनियाँ बसानी हैं।
और पुनर्वास के नाम पर हमें
हमारे ही शहर की सीमा से बाहर हाशिए पर धकेलना है
तो तुम्हारे तथाकथित विकास की मुख्यधारा में
शामिल होने के लिए
सौ बार सोचना पड़ेगा हमें।''[8]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आदिवासी काव्य विद्रोह और प्रतिरोध का काव्य है। आदिवासी संस्कृति, जीवन-दर्शन व उनके विश्व दृष्टिकोण के प्रति एक नई आत्मीय

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : डॉ. दीपक कुमार

Submitted: 27 Oct 2021, Revised: 09Nov 2021, Accepted: 18 Nov 2021, Published 30 Dec 2021

International Journal of Economic Perspectives,*15*(1), 625-630

Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

दृष्टि की मांग करती है। यह सृजनात्मकता का साहित्य है जिसमें जड़-चेतन, प्रकृति और सृष्टि सब सुंदर है।

संदर्भ सूची:

1. हिंदी सिनेमा में साहित्यिक विमर्श, डॉ. रमा, पृ.-151
2. आदिवासी साहित्य विमर्श : चुनौतियाँ और संभावनाएं, गंगा सहाय मीणा, फारवर्ड प्रेस, बहुजन साहित्य वार्षिक, अप्रैल 2013
3. नगाड़े की तरह बजते शब्द-निर्मला पुतुल, पृ.-12
4. वही, पृ.-8
5. आदिवासी केंद्रित हिंदी साहित्य, उषा कीर्ति राणावत, पृ.-148
6. आदिवासी साहित्य यात्रा, संपादक रमणिका गुप्ता, पृ.-60
7. आदिवासी साहित्य विमर्श : चुनौतियाँ और संभावनाएँ-गंगा सहाय मीणा, फारवर्ड प्रेस, बहुजन साहित्य वार्षिक अप्रैल, 2013
8. निर्मला पुतुल, अरावली उद्घोष, पृ.-93

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : डॉ. दीपक कुमार

Submitted: 27 Oct 2021, Revised: 09Nov 2021, Accepted: 18 Nov 2021, Published 30 Dec 2021